प्रेमचंद के फटे जूते

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» परसाई जी का व्यंग्य-लेखन: कोरे हास्य से अलग

प्रश्न 1 (आसान). परसाई जी का व्यंग्य सिर्फ़ हँसाने के लिए क्यों नहीं माना जाता?
उत्तर – क्योंकि उनका व्यंग्य पाखंड, भ्रष्टाचार और अंतर्विरोध के खिलाफ चेतना पैदा करता है।

प्रश्न 2 (आसान). "कोरे हास्य" का मतलब क्या है?
उत्तर – बिना अर्थ/संदेश के सिर्फ़ मज़ाक करना, जो सोच न जगाए।

प्रश्न 3 (मध्यम). बोलचाल की सामान्य भाषा परसाई जी के व्यंग्य को कैसे असरदार बनाती है?
उत्तर – भाषा सीधे-सपाट होने से बात आसानी से समझ में आती है और व्यंग्य ज्यादा मारक/प्रभावी लगता है।

प्रश्न 4 (कठिन). मान लो किसी व्यंग्य में लेखक खूब तंज करता है, लेकिन अंत में कोई सामाजिक/नैतिक संदेश नहीं निकलता। क्या वह "कोरे हास्य से अलग" होगा? कारण लिखो।
उत्तर – नहीं। "कोरे हास्य से अलग" व्यंग्य वही है जिसमें हँसी के साथ चेतना/आदर्श/गलत पर चोट स्पष्ट हो। बिना संदेश के तंज भी केवल हास्य बनकर रह जाता है।

» 'प्रेमचंद के फटे जूते' का व्यंग्य-लक्ष्य और भूमिका

प्रश्न 5 (आसान). निबंध में व्यंग्य किस प्रवृत्ति पर केंद्रित है?
उत्तर – आज की दिखावे की प्रवृत्ति और अवसरवादिता पर।

प्रश्न 6 (आसान). 'फटे जूते' शीर्षक को प्रतीक की तरह क्यों समझते हैं?
उत्तर – क्योंकि इसका संकेत भीतर के पाखंड/बेपरवाही की तरफ है, सिर्फ़ जूते के फटने तक सीमित नहीं है।

प्रश्न 7 (मध्यम). भूमिका में प्रेमचंद की सादगी दिखाने का उद्देश्य क्या है?
उत्तर – उसी सादगी को आधार बनाकर आज के दिखावे और अवसरवाद के खिलाफ आलोचना/व्यंग्य करना।

प्रश्न 8 (कठिन). अगर कोई समझे कि व्यंग्य सीधे प्रेमचंद पर है, तो सही व्याख्या क्या होगी?
उत्तर – सही लक्ष्य प्रेमचंद नहीं, बल्कि वह सोच है जो बाहर की बनावट को बड़ा और भीतर की ईमानदारी/लज्जा को छोटा कर देती है; 'फटे जूते' उसी प्रवृत्ति का प्रतीक संकेत है।

» फोटो का 'शब्दचित्र': जूते और चेहरे से अर्थ निकालना

प्रश्न 9 (आसान). लेखक जूते पर "अटक" कर क्यों देखता है?
उत्तर – क्योंकि वह जूतों की हालत से भीतर की बेपरवाही/भाव का संकेत पढ़ना चाहता है।

प्रश्न 10 (आसान). "अधूरी मुसकान" का मतलब क्या व्यंग्य में निकलता है?
उत्तर – चेहरे पर मुसकान तो है, पर भीतर से सच्ची खुशी/संकोच नहीं–दिखावा है।

प्रश्न 11 (मध्यम). अगर अँगुली ढक सकती थी, फिर भी नहीं ढकी–लेखक इससे क्या समझाता है?
उत्तर – वह लज्जा/संकोच/ध्यान की कमी यानी बेपरवाही का संकेत मानता है।

प्रश्न 12 (कठिन). फोटो का 'शब्दचित्र' कैसे बनता है? सिर्फ जूते का विवरण लिख देना ही पर्याप्त क्यों नहीं है?
उत्तर – शब्दचित्र तब बनता है जब लेखक जूतों की हालत (छेद, खुलापन, बेतरतीब बँधना) और चेहरे के भाव (बेपरवाही, अधूरी मुसकान) को जोड़कर उनके पीछे की प्रवृत्ति/भाव निकालता है; सिर्फ विवरण से भीतर का अर्थ नहीं निकलता।

» व्यंग्य-मुसकान का अर्थ: उपहास, नहीं शालीनता

प्रश्न 13 (आसान). अगर मुस्कान किसी की परेशानी पर ताना मारने लगे, तो वह किस तरह की मुस्कान होगी?
उत्तर – व्यंग्य-मुसकान (उपहास वाली)

प्रश्न 14 (आसान). लेखक किस मुस्कान को 'खुशी' नहीं मानता?
उत्तर – जो मुस्कान दूसरों पर हँसने/तंज करने की हो

प्रश्न 15 (मध्यम). फोटो में फटे जूते और अधूरी मुस्कान साथ हों, तो लेखक किस बात की तरफ इशारा कर रहा है?
उत्तर – कि यह सिर्फ बेपरवाही नहीं, मुस्कान भी उपहास/व्यंग्य का संकेत है; खुशी नहीं, तंज है।

प्रश्न 16 (कठिन). निम्न वाक्य पर विचार करो: 'पर किसी पर हँस भी रहा है!'–यह व्यंग्य-मुसकान के अर्थ को कैसे स्पष्ट करता है?
उत्तर – यह दिखाता है कि हँसी साथी/सहानुभूति की नहीं, दूसरे को नीचा दिखाने वाली है; इसलिए मुस्कान का अर्थ उपहास/व्यंग्य बनता है।

» दिखावे की राजनीति: जूता-टोपी का मूल्य बनाम 'परदे' का महत्व

प्रश्न 17 (आसान). लेखक के अनुसार 'परदा' किस काम आता है?
उत्तर – असली हालत/लज्जा को छिपाकर सामने से ठीक दिखाने के लिए।

प्रश्न 18 (आसान). जूता-टोपी के 'मूल्य' पर जोर देने का मतलब क्या है?
उत्तर – बाहरी चीज़ों की कीमत/शो-ऑफ को गरिमा समझना।

प्रश्न 19 (मध्यम). लेखक ने 'अँगुली दिखती है, पर पाँव सुरक्षित है' और 'अँगुली ढँकी है, पर पंजा नीचे घिस रहा है' क्यों कहा होगा?
उत्तर – ताकि बताया जा सके कि सिर्फ दिखावट ढक देने से असल नुकसान नहीं रुकता; 'परदा' बचाने की आदत विडंबनापूर्ण है।

प्रश्न 20 (कठिन). जब लोग फोटो/साज-सामान पर ज्यादा ध्यान दें और असल हालत सुधारें नहीं–तो लेखक किस तरह की 'दिखावे की राजनीति' को उजागर करता है?
उत्तर – वह दिखाता है कि लोग बाहरी चमक (जूता-टोपी, इत्र, फोटो) को महत्व देकर 'परदे' की तरह असल समस्याएँ छिपाते हैं, जिससे अंदर घिसाई/कमज़ोरी बनी रहती है।

» जूते का रूपक और 'टीला': जड़ता/ठोकर का कारण खोजना

प्रश्न 21 (आसान). लेखक 'टीला' किस तरह इस्तेमाल करता है–सिर्फ जमीन की चीज़ या प्रतीक की तरह?
उत्तर – प्रतीक की तरह, ताकि जड़ता/रुकावट के असली कारण की ओर संकेत हो।

प्रश्न 22 (आसान). "तुम समझौता कर नहीं सवेफ" का भाव क्या है?
उत्तर – रुकावट के सामने समझदारी से रास्ता/तरीका न बदल पाना–जिद/कमज़ोरी।

प्रश्न 23 (मध्यम). अगर ठोकर लगी तो उसे लेखक "दुर्घटना" की तरह क्यों नहीं छोड़ता? वह क्या खोजवाता है?
उत्तर – वह खोजवाता है कि ठोकर की असली वजह क्या थी–जिद/जड़ता/समझौता न करने की आदत।

प्रश्न 24 (कठिन). होरी और 'नेम-धरम' वाली चर्चा को 'टीला' के प्रतीक से जोड़कर समझाइए: लेखक यहाँ ठोकर का कारण किस प्रकार बताता है?
उत्तर – 'नेम-धरम' की जंजीर/कमज़ोरी होरी को भी रुकाती है; इसी तरह तुम्हारी भी कोई जंजीर-जैसी कमजोरी है, जिसके कारण बाधा (टीला) के सामने रास्ता नहीं बदलता और परिणाम ठोकर बनकर सामने आता है।

» अँगुली का इशारा: फूटे जूते से नैतिक/मानसिक संकेत

प्रश्न 25 (आसान). लेखक फटे जूते को सिर्फ शारीरिक कमजोरी क्यों नहीं मानता?
उत्तर – क्योंकि वह उसे निंदनीय/घृणित बात की ओर 'संकेत' और व्यंग्य का माध्यम बनाता है।

प्रश्न 26 (आसान). 'मैं समझता हूँ' वाक्य यहाँ क्या काम करता है?
उत्तर – लेखक का निष्कर्ष–वह 'अँगुली का इशारा' और व्यंग्य-मुसकान का अर्थ पकड़कर बात पूरी करता है।

प्रश्न 27 (मध्यम). "अँगुली को ढाँकने की चिंता" का मानसिक अर्थ क्या है?
उत्तर – व्यक्ति सुधार करने की जगह सिर्फ दिखावा/इमेज बचाने की कोशिश कर रहा है, इसलिए तलुआ/मन का नाश हो रहा है।

प्रश्न 28 (कठिन). 'अँगुली बाहर निकल आई है' और 'तुम चलोगे वैफसे?'–इन दोनों का व्यंग्य-सम्बंध बताइए।
उत्तर – अँगुली बाहर आने के बावजूद व्यक्ति रास्ता/व्यवहार नहीं बदलता; वह 'अँगुली छिपाने' पर अटका है। इसी मानसिक उलझन से चलना यानी जीवन-दृष्टि/चरित्र ठीक नहीं हो पाता, इसलिए 'कैसे चलोगे?' कहकर लेखक व्यंग्य करता है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. एक व्यक्ति के फोटो में जूते फटे हैं। सिर्फ़ यह देखकर लोग कहते हैं–"अरे कितना मज़ेदार/हँसने लायक है!" बताओ कि यह "कोरे हास्य" होगा या "परसाई जी जैसा व्यंग्य", और क्यों?

› पहले देखें: क्या सिर्फ़ ठहाका है या कोई ग़लत आदत/दिखावा सामने आ रहा है?

› अगर फोटो देखकर सिर्फ़ मज़ाक बने और कोई संदेश न निकले, तो यह कोरा हास्य है।

› अगर उसी गलती के जरिए बेपरवाही/दिखावा/अंतर्विरोध पर चोट लगे और लोगों को सोचने पर मजबूर करे, तो यह व्यंग्य है।

› परसाई जी में भाषा आम बोलचाल जैसी होती है, इसलिए कटाक्ष सीधा प्रभाव छोड़ता है।

उत्तर – यह परसाई जी जैसा व्यंग्य तभी माना जाएगा जब हँसी के साथ बेपरवाही और दिखावे जैसी सामाजिक कमजोरी पर चोट लगे और चेतना जगाने का संदेश मिले; केवल फोटो को देखकर ठहाका लगाना कोरा हास्य होगा।

उदाहरण 2. प्रश्न: 'प्रेमचंद के फटे जूते' निबंध में व्यंग्य-लक्ष्य क्या है और शीर्षक प्रतीकात्मक कैसे समझें?

› पहले भूमिका समझो: परसाई जी प्रेमचंद के व्यक्तित्व की सादगी को आधार बनाते हैं।

› फिर ध्यान दो कि निबंध का फोकस 'अंदर की सोच' पर है–कौन दिखावा करता है, कौन अवसरवाद अपनाता है।

› शीर्षक 'फटे जूते' को शाब्दिक नहीं, प्रतीक की तरह लो: छोटे-से फटे जूते के बहाने बेपरवाही/पाखंड दिखता है।

› इसलिए व्यंग्य प्रेमचंद पर नहीं, उस प्रवृत्ति पर है जो 'बाहर का ढोंग' करके भीतर से कमजोर/स्वार्थी हो जाती है।

उत्तर – व्यंग्य-लक्ष्य 'आज की दिखावे की प्रवृत्ति' और 'अवसरवादिता' है। शीर्षक प्रतीकात्मक है–'फटे जूते' व्यक्ति/समाज की भीतर की बेपरवाही, पाखंड और खोखलेपन की ओर संकेत करते हैं; निशाना प्रेमचंद पर नहीं, उस सोच पर है।

उदाहरण 3. फोटो में जूते बेतरतीब बँधे हैं, एक जूते में बड़ा छेद है और अँगुली बाहर दिख रही है। चेहरे पर मुसकान है, लेकिन वह अधूरी लगती है। लेखक यहाँ क्या अर्थ निकाल रहा है?

› पहले जूतों की स्थिति देखो: "बेतरतीब बँधे" और "छेद" सीधे लापरवाही दिखाते हैं।

› फिर जूते के जरिए संकेत समझो: अगर थोड़ी सावधानी से अँगुली ढक सकती थी, फिर भी ढकी नहीं–संकोच/शर्म का अभाव संकेत करता है।

› अब चेहरे की "अधूरी मुसकान" पढ़ो: मुस्कान दिखावे के लिए है, भीतर की खुशी/आराम नहीं।

› इन दोनों को जोड़कर निष्कर्ष निकालो: लेखक भीतर की बेपरवाही और अवसरवादी दिखावे का व्यंग्य बना रहा है।

उत्तर – लेखक जूतों की लापरवाही और चेहरे की "अधूरी मुसकान" के जरिए भीतर के खोखलेपन/बेपरवाही और दिखावे की प्रवृत्ति का अर्थ निकाल रहा है।

उदाहरण 4. मान लो फोटो में किसी व्यक्ति के कपड़े फटे हैं और फिर भी उसके चेहरे पर हल्की मुस्कान है। तुम बताओ–यह मुस्कान 'शालीनता' है या 'उपहास/व्यंग्य'? साथ में कारण भी लिखो।

› फोटो के संकेत गिनो: कपड़े/जूते फटे हैं, हालत असहज दिख रही है।

› अब मुस्कान का चरित्र देखो: क्या वह किसी की परेशानी को छिपा रही है या उसे मज़ाक बना रही है?

› अगर मुस्कान "मैं ठीक हूँ" जैसी ऊँचाई दिखाती है और सामने वाले की कमी पर हँसने जैसा भाव देती है, तो वह उपहास/व्यंग्य है।

› लेखक के संकेतों के हिसाब से निष्कर्ष लिखो कि यह खुशी नहीं बल्कि आलोचना का औजार है।

उत्तर – यह मुस्कान शालीनता नहीं बल्कि उपहास/व्यंग्य है, क्योंकि असहज हालत के बावजूद मुस्कान सामने वाले/स्थिति को तंज की तरह पेश करती है–यानी लेखक इसे आलोचना का संकेत मानकर चलाता है।

उदाहरण 5. एक छात्र कहता है: "परसाई जी ने बस जूते की हालत का मज़ाक बनाया है, 'परदा' जैसी बात नहीं।" बताओ–लेखक का तर्क इस बात को कैसे खारिज करता है? (दिखावे की राजनीति और 'परदे' के महत्व को जोड़कर समझाओ।)

› लेखक बाहरी चीज़ों की कीमत/शो-ऑफ की बात करता है: टोपी, इत्र, जूते की कीमत बढ़ने का ज़िक्र

› फिर वह 'परदे' पर जोर देता है: असल समस्या छुपाकर सामने से ठीक दिखना

› दोनों उदाहरणों की तुलना करता है: एक में अँगुली दिखती है पर पाँव सुरक्षित; दूसरे में अँगुली ढँकी है पर पंजा घिस रहा

› इससे स्पष्ट होता है कि मज़ाक सिर्फ जूते के फटने का नहीं, 'ढकने' की मानसिकता का है

उत्तर – लेखक दिखाता है कि जूते-टोपी की बाहरी चमक 'गरिमा' नहीं है; असली व्यंग्य "परदा" यानी कमी/लज्जा छिपाने वाली राजनीति पर है–क्योंकि ढकाई से अंदर की घिसाई रुकती नहीं, बस दिखावट सुधरती है।

उदाहरण 6. निबंध में "कोई टीला जो रास्ते पर खड़ा हो गया था..." वाली पंक्ति के बाद लेखक "तुम उसे बचाकर... निकल सकते थे" और "तुम समझौता कर नहीं सवेफ" कहकर क्या स्पष्ट करता है? जूता फटना यहाँ किस कारण की ओर इशारा है–सिर्फ दुर्घटना या कुछ और?

› पहले समझो: शारीरिक स्तर पर टीला दिखाता है कि ठोकर लग सकती है।

› फिर लेखक 'बचाकर निकल सकते थे' कहता है–यानी रास्ता बदलना/समझदारी दिखाना संभव था।

› अब लेखक 'समझौता कर नहीं सवेफ' कहकर ठोकर का कारण जिद/जड़ता बताता है।

› इसलिए जूता फटना 'दिखने वाला असर' है; असल 'वजह' भीतर की कमजोरी/आदत है जो बाधा के सामने भी नहीं बदलती।

उत्तर – यह केवल दुर्घटना नहीं है। लेखक दिखाता है कि ठोकर/जूते का फटना उस जिद-जड़ता का परिणाम है, जो बाधा (टीला) के सामने रास्ता बदलने या समझौता करने के बजाय वही टिके रहने की आदत बनाती है।

उदाहरण 7. लेखक ने कहा: "तुम क्या उसकी तरफ़ाफ इशारा कर रहे हो, जिसे ठोकर मारते-मारते तुमने जूता पफाड़ लिया?" इस लाइन में 'अँगुली का इशारा' का नैतिक/मानसिक संकेत क्या बनता है?

› पहले शारीरिक तथ्य पकड़ो: ठोकर लगती है, जूता फटता है, अँगुली दिखने लगती है।

› अब लेखक का 'मोड़' समझो: लेखक इसे दुर्घटना नहीं, व्यवहार की जिद/आदत का नतीजा मान रहा है।

› 'इशारा' किस तरफ है? उस 'घृणित/निंदनीय बात' की तरफ जो व्यक्ति छिपाना चाहता है।

› फिर यह देखो कि असली चिंता क्या है: जूता फाड़कर भी बदलाव नहीं, बस अँगुली/दिखावे को ढकने की कोशिश।

› निष्कर्ष: अँगुली बाहर = मानसिक कमजोरी/नैतिक गड़बड़ी का संकेत; इशारा व्यंग्य का हथियार है।

उत्तर – यहाँ 'अँगुली का इशारा' उस घृणित/निंदनीय बात की ओर नैतिक संकेत बनता है जिसे व्यक्ति छिपाना चाहता है; जूता फटना उसके व्यवहार की जिद और दिखावा बचाने की मानसिकता का परिणाम है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

- उत्तर लिखते समय "केवल हँसाना नहीं, चेतना जगाना" जरूर लिखो।
- उत्तर लिखते समय साफ लिखो: 'व्यंग्य प्रेमचंद पर नहीं, सोच/प्रवृत्ति पर'।
- व्यंग्य समझने में जूते/चेहरे के संकेतों को जोड़कर निष्कर्ष लिखो।
- परीक्षा में उत्तर लिखते समय साफ लिखो: मुस्कान खुशी नहीं, उपहास/व्यंग्य है।
- व्यंग्य समझाते समय 'परदा' और 'बाहरी कीमत' का फर्क ज़रूर लिखो।
- प्रश्न आए तो 'टीला' को प्रतीक मानकर 'समझौता न करने' वाली वजह लिखना जरूरी रखें।
- अँगुली/जूता का अर्थ 'प्रतीक' मानकर लिखो–सिर्फ शाब्दिक नहीं।

एक नज़र में रिवीज़न

› - हँसी + चेतना = परसाई जी का व्यंग्य
› - निशाना: दिखावा और अवसरवाद; शीर्षक प्रतीकात्मक
› फटी चीज़ + अधूरी मुसकान = भीतर का खोखलापन
› मुस्कान में उपहास = व्यंग्य; शालीनता नहीं
› जूता-टोपी=दिखावा, 'परदा'=छिपाना; घिसाई अंदर ही रहती है।
› टीला = बाधा नहीं, जिद/जड़ता का प्रतीक
› फटा जूता = मन का संकेत; अँगुली ढकना = दिखावा